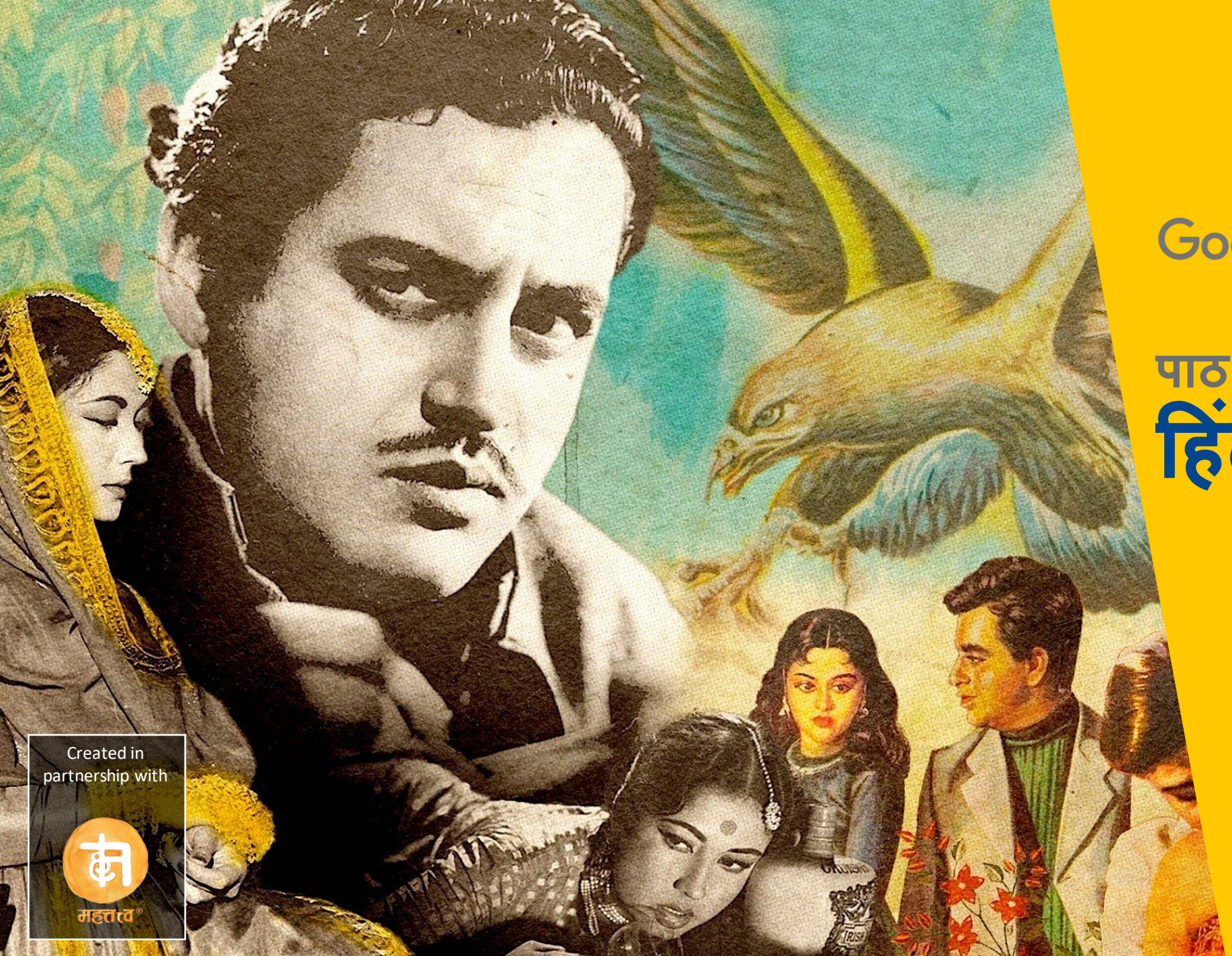

Google Arts & Culture

पाठ योजना:
हिंदी सिनेमा

यह पाठ योजना वैश्विक स्तर पर लोगों के लिए तैयार किया गया है। यह विशेष रूप से १५ वर्ष से अधिक उम्र के विद्यार्थियों के लिए सबसे उपयुक्त है।

हिंदी फिल्म *जश्न* से वैजयंतीमाला की तस्वीर, १९५५, म्यूजियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्राफी

पाठ सारांश

अनुमानित अवधि: **३ सत्र (४५ मिनट प्रति सत्र)**

१

इस इकाई में **आप** हिंदी सिनेमा के इतिहास से परिचित हो सकेंगे। आप इसकी अथम शुरुआत, इसे आकार देने वाले प्रभावों, इसकी विविध शैलियों और इसके अनुपम विकास की सराहना करेंगे।

२

आप हिंदी सिनेमा के विषय में दुर्लभ स्मृतिचिह्नों और अभिलेख के माध्यम से अपनी धारणा बनाने के लिए जागरूक हो सकेंगे।

३

आप जान सकेंगे कि एक विचार के अंकुरण से लेकर फिल्म फुटेज की समापन प्रक्रिया तक किन आवश्यक मूलभूत कदमों की आवश्यकता होती है।

गूगल आर्ट्स & कल्चर में ढेरों तस्वीरें, प्रदर्शन योग्य चीजें, और वर्चुअल टूर शामिल हैं जिसे आप देख सकते हैं। आगे आने वाली यात्रा के लिए तैयार हो जाइए।

संसाधन

इस पाठ के लिए आवश्यक संसाधनों की सूची

- इंटरनेट कनेक्शन के साथ कोई आई.टी.यंत्र।
- लेखन सामग्री पेपर/नोटबुक, पैन, पेंसिल, कैची, गोंद, आदि।
- कला वस्तुएं जैसे - पेंट, ब्रश, आदि।
- लघु फिल्म बनाने हेतु अन्य विविध वस्तुएं (जैसे- एक कैमरा, एक स्मार्टफोन, रिकॉर्डिंग करने हेतु उपलब्ध यन्त्र।

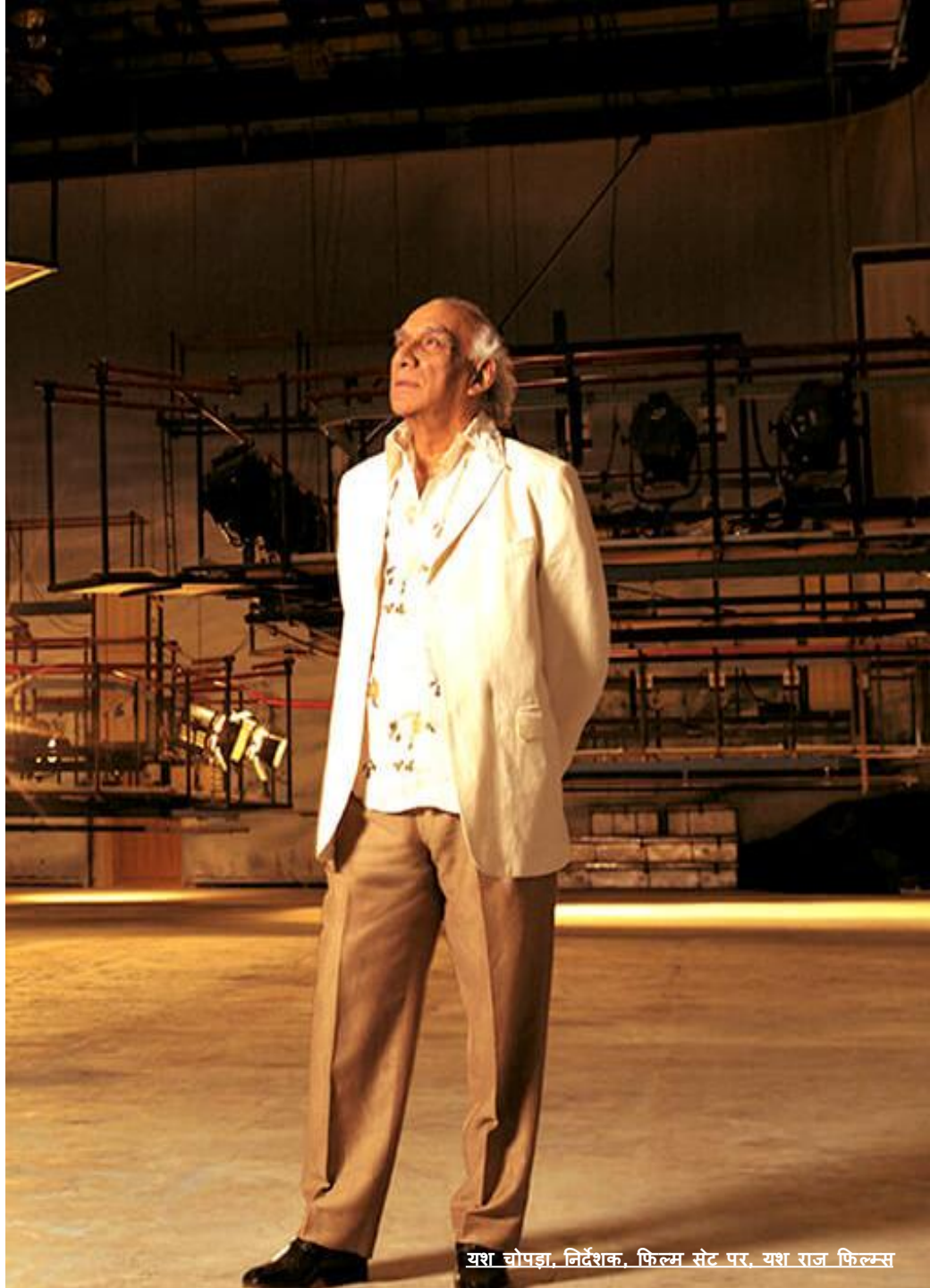

यश चोपड़ा, निर्देशक, फिल्म सेट पर, यश राज फिल्म्स

शब्दावली

शब्द जिन्हें आपको देखने की आवश्यकता हो सकती है

आर्ट, अभिलेख, इतिहास, कथात्मक, कला, कलाकृति, कृति, चलचित्र, चित्रपट, दृश्य, नृत्य, नृत्यकला, परिदृश्य, पौराणिक, प्रदर्शन, बनावट, बॉलीवुड, संकलन, संगीत, सांस्कृतिक, सिनेमा, समकालीन, स्टाइलिंग, हस्तनिर्मित, हिंदी, महाकाव्य, लॉबी कार्ड, लोकप्रिय, शैली, शैलीगत, श्रवण शक्ति, सामाजिक

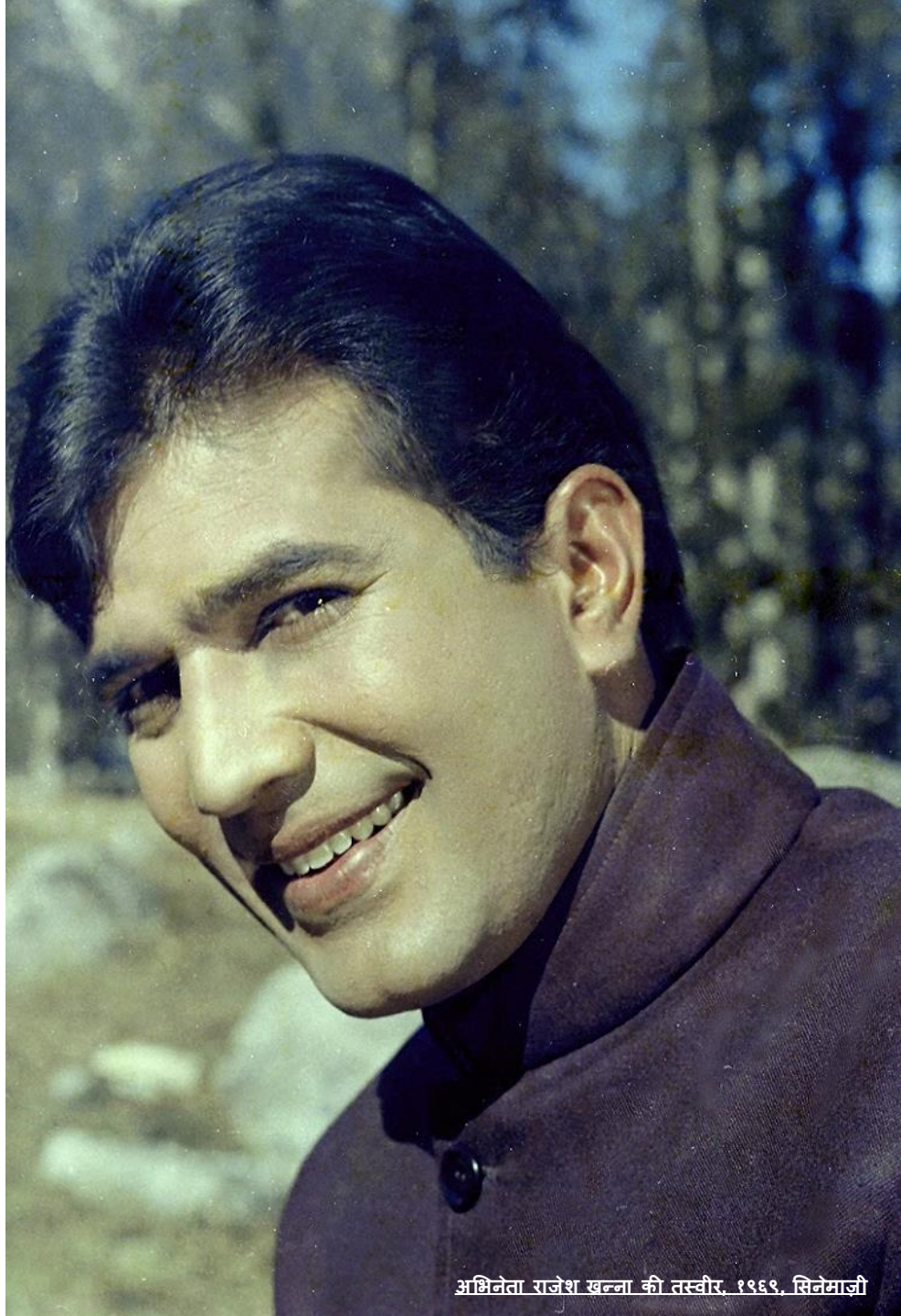

अभिनेता राजेश खन्ना की तस्वीर, १९६९, सिनेमाज़ी

संकेत चिह्न

संकेत चिन्हों की सूची

- इसका उपयोग विशेष ध्यान देने वाले सवालों और महत्वपूर्ण निर्देशों के लिए किया जाता है।
- इस संकेतक का इस्तेमाल विशेष सवालों के जवाब के लिए किया जाता है।
- इसे उन सवालों को दशार्ने के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिनके लिए स्वतंत्र रूप से शोध की जरूरत होती है।
- इसका प्रयोग उन कहानियों को दशार्ने के लिए किया जाता है जिनसे आप उस विषय के बारे में और अधिक जानकारी पा सकते है।
- इसका इस्तेमाल उन कहानियों या वीडयो को इंगित करने के लिए किया जाता है ि ऑडियो भी शामिल होता है।

मुगल-ए-आज़म फिल्म का पोस्टर, म्यूजियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्राफी, बैंगलोर

सत्र-१

हिंदी सिनेमा का इतिहास: प्रस्तावना

अनुमानित समय:
४५ मिनट

हिंदी फ़िल्म आराधना में अभिनेता राजेश खन्ना और शर्मिला टैगोर का चलचित्र, १९६९, सिनेमाज़ी

हिंदी सिनेमा का शुभारंभ (१८९०) मूक फिल्मों से हुआ। पहली मूक फिल्म, दादा साहेब फाल्के की *राजा हरिश्चंद्र* (१९१३) की सफलता से, सिनेमा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। हिंदी सिनेमा ने आम जनता के सामने आने वाली चुनौतियों पर एक नया लेकिन परिचित दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसने सिनेमा को आकर्षक और रोचक बना दिया।

दाहिनी ओर दी गई कहानी को पढ़ें। फिर किसी सहकर्मी की सहायता से नीचे दिए गए 'जोड़ें और चिंतन करें' नेमी को पूरा करें:

जोड़ें।

गैर-मौखिक संकेतों और इशारों का प्रयोग करके अपने साथियों के साथ भूमिका निभाने के लिए एक दिलचस्प दृश्य की पहचान करें।
चूंकि पात्रों को मूक रहना हैं, सशक्त इशारों और तौर-तरीकों का प्रयोग करके आप अपनी बातों को कैसे व्यक्त करेंगे?

और चिंतन करें।

एक चिंतन सत्र के साथ भूमिका का निर्वाह करें।
अपने साथियों के साथ, हिंदी सिनेमा के स्वर्ण युग के बारे में अपने विचारों पर चिंतन करें और साझा करें।

हिंदी सिनेमा के स्वर्ण युग और उसके महत्व के विषय में कहानी पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें।

फिल्म अमरभूपाली के एक दृश्य की तस्वीर, वी.शांताराम मोशन पिक्चर साइंटिफिक रिसर्च एंड कल्चरल फाउंडेशन

भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वों ने हिंदी सिनेमा की कला और शैलियों को कैसे प्रभावित किया, यह देखने के लिए यहां क्लिक करें।

फिल्म मुगल-ए-आजम से चित्र, १९६०

स्वर्ण युग

हिंदी सिनेमा का स्वर्ण युग (१९३० से ६० के दशक) प्रशंसित फिल्मों, विपुल निर्देशकों, अभिनेताओं और संगीतकारों से चिन्हित रहा। दिलीप कुमार, राज कपूर और देव आनंद जैसी हस्तियों का प्रदर्शन उस युग के सबसे महत्वपूर्ण आकर्षणों में से एक था। मधुबाला, मीना कुमारी और नरगिस उस समय के कुछ सबसे प्रतिष्ठित चेहरों में से थे।

बाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें, ऑनलाइन शोध करें और उन तत्वों की एक सूची बनाएं जो हिंदी सिनेमा में विभिन्न समय अवधि के दौरान विकसित हुए।

दशकों से चले आ रहे हिंदी फिल्मों के शैलीगत और कथात्मक तत्वों पर अपना ध्यान केंद्रित करें।
क्या कुछ सामान्य तत्वों पर बार-बार काम किया जा रहा था? उसके क्या परिणाम हुआ?

हाल ही में आपके द्वारा देखी गयी किसी फिल्म पर विचार करें।
शोध करें और नोट करें कि विषयवस्तु के अनुरूप शैलीगत और कथात्मक विकल्पों को कैसे बदला गया है। ऐसे कौन से तत्व हैं जो फिल्म के आरंभिक कालखंड के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को दर्शाते हैं?

मधुबाला को 'प्यार किया तो डरना क्या' में अभिनय करते हुए देखने के लिए यहां क्लिक करें।

अपने लंबे इतिहास के दौरान, हिंदी सिनेमा को भारतीय महाकाव्यों, लोक परंपराओं, पारसी थिएटर, उर्दू साहित्य और हॉलीवुड संगीत सहित विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा मिली है। प्रभावों का यह संकलन वर्षों से हिंदी सिनेमा को विकसित और अनुकूलित करने में सहायक रहा है।

दाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें, ऑनलाइन शोध करें और नीचे दिए गए निर्देशों का पालन करके '३-२-१ रेखाचित्रीय आयोजक' बनाएं:

३. एक उल्टा पिरामिड बनाएं और उसे तीन भागों में विभाजित करें। शीर्ष अनुभाग में, हिंदी सिनेमा को प्रभावित करने वाले तत्वों के विषय में अपने तीन प्रश्न व्यक्त करें।

२. मध्य भाग में आपके द्वारा खोजे गए किन्हीं दो तथ्यों को लिपिबद्ध करें।

१. नीचे के अनुभाग में, एक सादृश्य बनाएं। उदाहरण के लिए, 'हिंदी सिनेमा ने दुनिया का भारत को देखने का नजरिया बदल दिया है, जैसे हॉलीवुड ने अमेरिका के लिए किया है।

धर्म और पौराणिक कथाओं ने प्रारंभिक हिंदी सिनेमा को कैसे प्रभावित किया, यह देखने के लिए यहां क्लिक करें।

महाबली हनुमान का पोस्टर, अल्ट्रा मीडिया एंड एंटरटेनमेंट

हिंदी सिनेमा में फैशन के विकास के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु यहां क्लिक करें।

फिल्म *चांदनी* में ट्रेंडी स्वेटर पहने मुख्य अभिनेता ऋषि कपूर

फैशन और स्टाइल

हिंदी फिल्म हस्तियों के फैशन और स्टाइल ने भारतीयों के साथ-साथ दक्षिण एशिया के अन्य समुदायों की परिधान-संबंधी भावनाओं को आकार दिया है। बंदगला कोट, साड़ी पहनने की विभिन्न शैलियाँ, अनारकली कुर्ते और विशिष्ट हेयर स्टाइल का बेधड़क अनुकरण किया जाता है। बड़े चश्मों, स्कार्फ़, अलग-अलग तरीके की टोपियां और कई एक्सेसरीज ने समय के साथ फैशन के चलन एवं रुझान को निर्धारित किया है। ९० के दशक में वैश्विक फैशन रुझानों के संपर्क में आने से हिंदी फिल्मों में फैशन डिजाइनरों की मांग बढ़ गई।

बाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें। फिर 'सोचें, योजना बनाएं, चर्चा करें' नेमी को नीचे दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा करें:

परिधान डिज़ाइन के आवश्यक तत्वों के बारे में सोचें।
अपने पसंदीदा पात्र के लिए पोशाक डिज़ाइन करते समय रेखा, द्रव्यमान, आकार, रंग और बनावट जैसे विभिन्न डिज़ाइन तत्वों के बारे में सोचें।

अपनी पसंद की सामग्री का उपयोग करके एक पोशाक डिज़ाइन करें।
आप बचे हुए कपड़े के टुकड़े, पुराने अखबार, पुनर्नवीनीकृत सामग्री जैसे कार्डबोर्ड बॉक्स, पेपर टॉवल रोल, ब्राउन पेपर, आदि का प्रयोग कर सकते हैं। आप कागज पर या ऑनलाइन स्केच भी बना सकते हैं।

पात्र परिरूप के संदर्भ में परिधान डिजाइन के महत्व पर चर्चा करें।
अपने साथियों के साथ चर्चा करें कि मूल रचना तत्वों में परिवर्तन किसी किरदार के विवरण में कैसे सहायक हो सकता है?

द्वितीय विश्व युद्ध और भारत के विभाजन जैसे अशांत समयकाल के दौरान गंभीर सामाजिक, आर्थिक व राजनितिक विषयो को हिंदी सिनेमा के परदे पर दर्शाया गया। आज के समय में, हिंदी मसाला फिल्में कॉमेडी, एक्शन और रोमांस का मिश्रण है। इसके विपरीत, 'पैरेलल' या 'आर्ट सिनेमा' यथावाद से प्रेरित है।

दाहिनी ओर दी गई कहानी को पढ़ें, और शोध करें। फिर, सहकर्मी की सहायता से नीचे दिए गए 'जोड़िये, प्रस्तुति और चिंतन' नेमी को पूरा करें:

जोड़िये।

अपने साथियों के सामने संवाद बोलकर किसी एक फिल्म से गहराई के साथ जुड़ें।
अपने संवादों की प्रस्तुति को संबंधित तौर-तरीकों और कार्यों के साथ पूर्ण करें।

प्रस्तुति।

चुने हुए संवाद बारी-बारी से बोलें।
क्या एक संवाद का लहज़ा फिल्म की शैली से परिभाषित होता है?

चिंतन।

आपके और आपके साथियों द्वारा चुने गए संवाद पर विचार करें।
प्रत्येक कलाकार इस बात पर विचार करेगा कि चुने हुए संवादों में से कौन-सा संवाद उत्कृष्ट और यादगार है और क्यों?

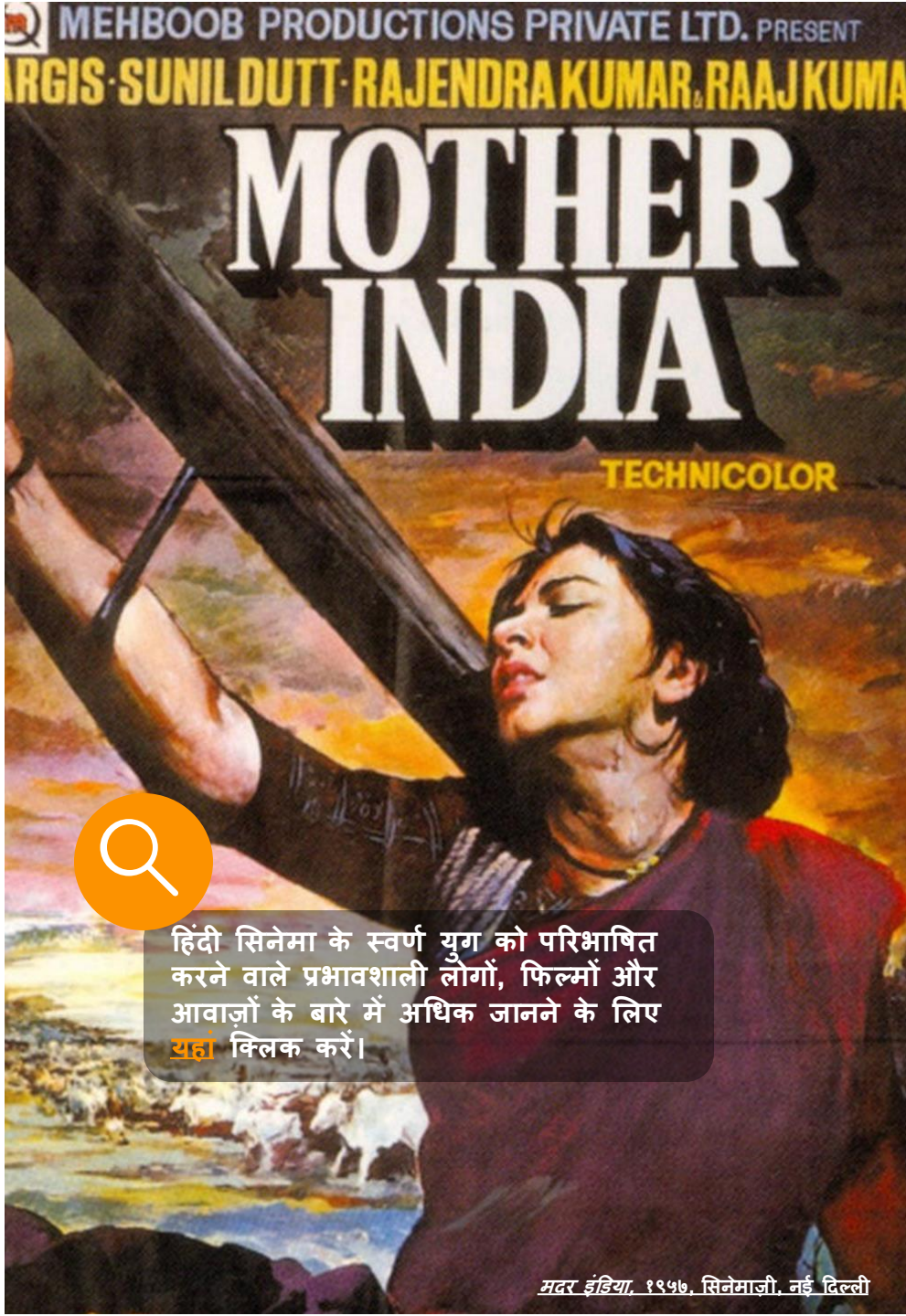

हिंदी सिनेमा के स्वर्ण युग को परिभाषित करने वाले प्रभावशाली लोगों, फिल्मों और आवाज़ों के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

मदर इंडिया, १९५७, सिनेमाज़ी, नई दिल्ली

१९४९ से १९८४ तक हिंदी सिनेमा में अभिनेत्रियों के चित्रण के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

हिंदी फिल्म दोस्ती से उषा किरण की तस्वीर, १९५४, म्यूजियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्राफी

हिंदी सिनेमा में महिलाएँ

सामाजिक पाबंदियों के चलते पुरुष अदाकार ही स्त्री भूमिका निभाने मंच पर आया करते थे। किन्तु, दुर्गा खोटे, देविका रानी व अन्य अग्रणी महिलाओ की कामयाबी के कारण सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आने का संकेत मिला। हालाँकि, जब महिलाएँ चित्रपट पर दिखाई दीं, तब भी वे अक्सर रूढ़िवादी भूमिकाओं को चित्रित करने तक ही सीमित थीं। आज, उद्योगों के सतत विकास ने महिलाओं को विविध, प्रेरक और मजबूत किरदार निभाने के लिए प्रेरित किया है।

दाहिनी ओर दी गई कहानी को पढ़ें, और नीचे दी गई 'सोचें, खोजें, विचार करें' नेमी को पूरा करें:

सोचें।

कुछ अभिनेत्रियों की सूची बनाएं जिनके लिए भारतीय फिल्मों में विशिष्ट भूमिकाएँ लिखी गईं।

खोजें।

क्या आपको लगता है कि हिंदी सिनेमा में महिला पात्रों की कमी है? क्या महिला पात्र पुरुष पात्र से कम महत्वपूर्ण नजर आती हैं? क्यों या क्यों नहीं?

विचार करें।

समय के साथ फिल्मों में महिलाओं का चित्रण किस प्रकार बदल गया है?

उन्नत फिल्म प्रौद्योगिकी के साथ उत्पादन, पहुंच और संरक्षण को बढ़ावा मिला। हिंदी सिनेमा वैश्विक मंच पर खूब फल-फूल रहा है। अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा और पुरस्कार इसके सार्वभौमिक आकर्षण की पुष्टि करती है।

हिंदी सिनेमा के कुछ दूरदर्शी फिल्म निर्माताओं और उनकी उल्लेखनीय फिल्मों के बारे में शोध करें। फिर नीचे दिए गए 'देखें, सोचें, विचार करें' नेमी का उपयोग करके आप जो देखते हैं उसका विश्लेषण करें।

देखें।

क्या आपने अपने शोध के दौरान हिंदी सिनेमा के विकास के बारे में कुछ नया सीखा??

सोचें।

सिनेमा के विकास में एक फिल्म निर्माता का दृष्टिकोण कैसे मदद करता है? अपने विचार साझा करें और अपने उत्तर के पक्ष में एक उदाहरण का भी उपयोग करें।

विचार करें।

कुछ हिंदी फिल्मों ने शक्तिशाली सामाजिक टिप्पणियों के रूप में भी काम करते हुए 'महान कला' का दर्जा कैसे हासिल किया है?

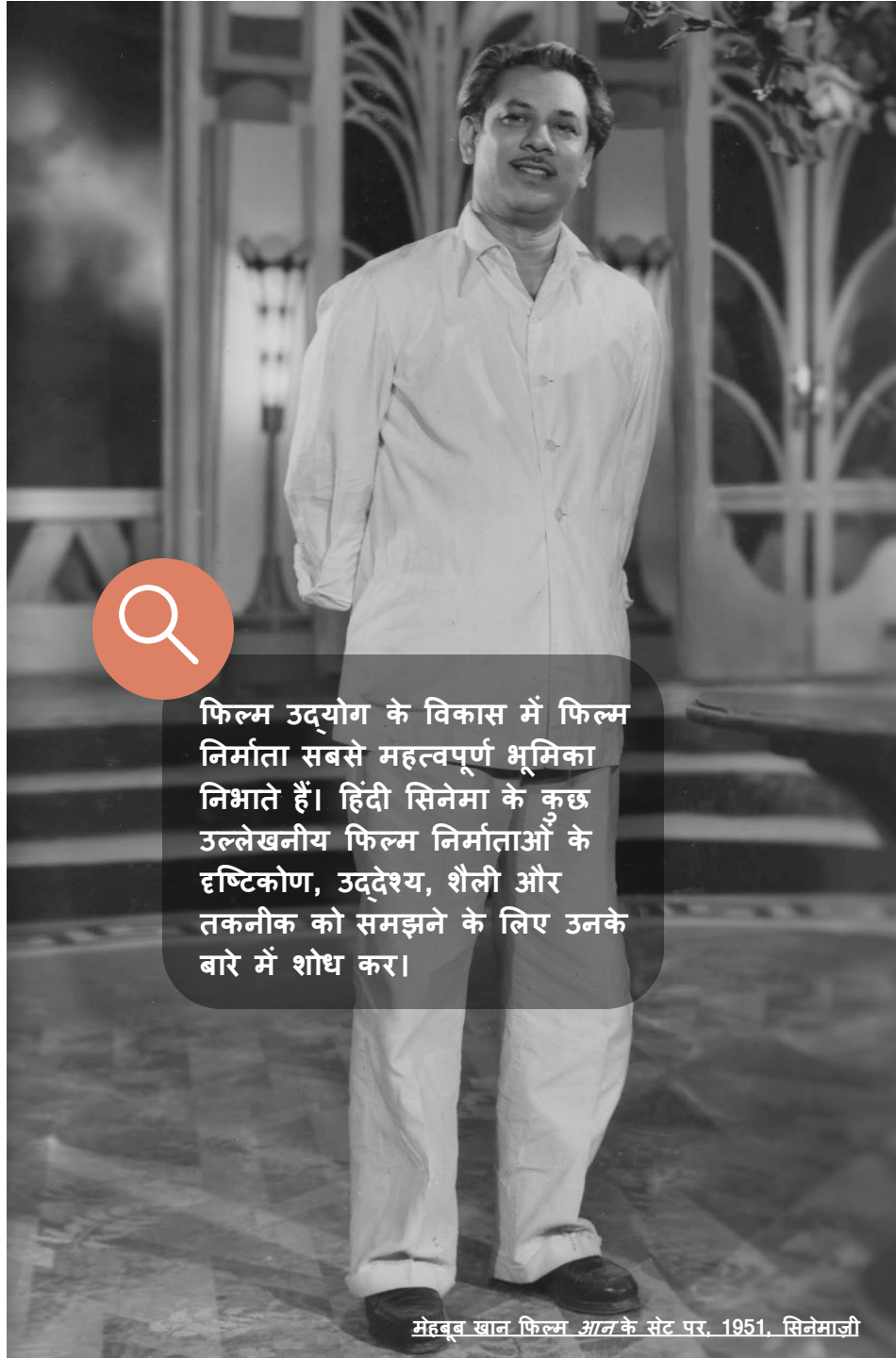

फिल्म उद्योग के विकास में फिल्म निर्माता सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिंदी सिनेमा के कुछ उल्लेखनीय फिल्म निर्माताओं के दृष्टिकोण, उद्देश्य, शैली और तकनीक को समझने के लिए उनके बारे में शोध कर।

मेहबूब खान फिल्म *आन* के सेट पर, 1951, सिनेमाज़ी

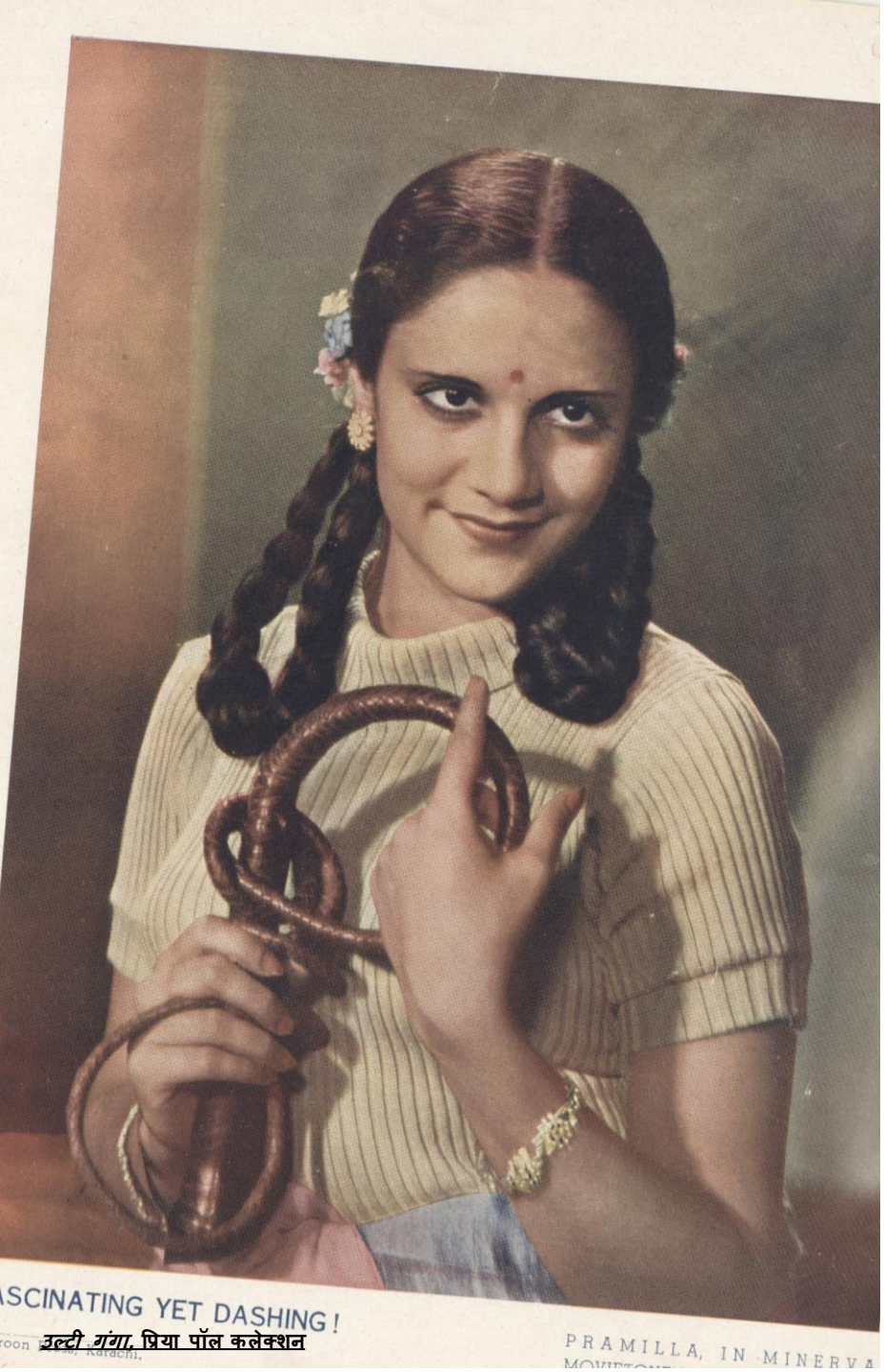

उल्टी गंगा, प्रिया पॉल कलेक्शन

मान लीजिए कि आप एक पत्रकार हैं। आप किस फिल्म स्टार, निर्देशक या गायक का इंटरव्यू लेना चाहेंगे?

उन प्रश्नों की एक सूची बनाएं जो आप अपनी पसंद के प्रतिष्ठित व्यक्ति से पूछना चाहेंगे। इन प्रश्नों को तैयार करने में वास्तविकता और सूझबूझ से काम लेने का प्रयास करें।

फिर, किसी सहकर्मी के साथ एक मॉक इंटरव्यू करें और उसका वीडियो बनाएं। आप कुछ विशेष ध्वनि प्रभाव जोड़ सकते हैं (उदाहरण के लिए, दर्शकों की तालियों की आवाज़)। अपने साथियों की प्रतिक्रिया पाने के लिए उनके साथ इंटरव्यू साझा करें।

अपनी प्रगति की जांच के लिए इस प्रश्नोत्तरी में शामिल हों।

१. निम्नलिखित में से १९१३ में दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित कौन-सी हिंदी सिनेमा की पहली मूक फिल्म थी?
क. *शकुंतला*
ख. *आलम आरा*
ग. *किशन कन्हैया*
घ. *राजा हरिश्चंद्र*

२. हिंदी सिनेमा के किस दौर में दिलीप कुमार, राज कपूर और देव आनंद की सितारा तिकड़ी का बोलबाला था?
क. मौन युग
ख. स्वर्ण युग
ग. ८० और ९० का दशक
घ. २१ वीं सदी

३. निम्नलिखित में से कौन-सी हिंदी फिल्म की अभिनेत्री ७० के दशक में फैशन की 'बोहेमियन शैली' को पश्चिम से सिल्वर स्क्रीन पर लेकर आई?
क. मीना कुमारी
ख. नरगिस
ग. जीनत अमान
घ. शर्मिला टैगोर

४. भारत में मसाला फिल्म की शैली मुख्यतः -
क. मुख्यधारा है
ख. कला उन्मुख है
ग. नई लहर है
घ. बहुभाषी है

५. यदि किसी फिल्म का लक्ष्य दर्शकों को हंसाना है तो वह किस शैली से संबंधित होगी?
क. ट्रेजेडी
ख. कॉमेडी
ग. एक्शन
घ. पारिवारिक नाटक

उत्तर पृष्ठ ३५ पर देखे जा सकते हैं

हिंदी फ़िल्म से मीना कुमारी की तस्वीर, *यहूदी*, १९५८, म्यूज़ियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्राफी

सत्र-२

स्मृति चिन्ह और अभिलेख

अनुमानित समय:
४५ मिनट

फ़िल्म पोस्टर

उल्लेखनीय फिल्मों से जुड़ी यादगार वस्तुओं, जैसे पोस्टर और लॉबी कार्ड, को अभिनेताओं या निर्देशकों के साथ जुड़ाव के कारण एकत्र और संरक्षित किया जाता है। फिल्म के पोस्टर, कथानक और विषयवस्तु फिल्म कलाकार की भूमिका को बताने के लिए एक विपणन उपकरण के रूप में काम करते हैं। हाथ से चित्रित फिल्मी पोस्टर दुर्लभ हो गए हैं और संग्रहालयों में ही पाए जाते हैं। मुद्रित फिल्म पोस्टर २०वीं सदी की शुरुआत से ही अस्तित्व में हैं जबकि डिजिटल फोटो प्रिंटिंग १९९० के दशक में अस्तित्व में आई।

दाईं ओर दी गई कहानी पढ़ें। फिर नीचे दिए गए निर्देशों के अनुसार 'खोजें, चिंतन, विचार करें' नेमी को पूरा करें:

खोजें।

विभिन्न शैलियों की फिल्मों के पोस्टर तलाशने के लिए ऑनलाइन शोध करें।
क्या किसी पोस्टर की कलात्मकता फिल्म की शैली या कथानक से परिभाषित होती है?

चिंतन।

प्रत्येक पोस्टर में आपके द्वारा देखे गए अंतरों पर कुछ पंक्तियाँ लिखें।
फ़िल्मों के प्रचार और विज्ञापन के लिए पोस्टरों की शैली कैसी होनी चाहिए?

विचार करें।

प्रत्येक फिल्म पोस्टर एक दुसरे से कैसे अलग है?
किसी फिल्म की शैली या विषयवस्तु को लिखते समय इस्तेमाल की जा रही काल्पनिक विषय, विषय की लिपि, शैली, रंग और प्रतीकवाद पर पूरा ध्यान दीजिए।

हिंदी सिनेमा उद्योग में फिल्म पोस्टर के इतिहास, कलात्मक सौंदर्यशास्त्र और विकास के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु यहां क्लिक करें।

डॉ. कोटनिस की अमर कहानी, एस.एम. पंडित बनाम शांताराम मोशन पिक्चर, साइंटिफिक रिसर्च एंड कल्चरल फाउंडेशन

गूगल आर्ट्स & कल्चर पर हिंदी फ़िल्म के पोस्टरों का संग्रह देखने के लिए यहां क्लिक करें।

लॉबी कार्ड

हिंदी सिनेमा में टैब्लो शॉट्स के पीछे के कलात्मक सौंदर्य और उसके उद्देश्य को समझने के लिए यहां क्लिक करें।

१९१३ से, फिल्म के मुख्य कथानक और नायकों को चित्रित करने के लिए थिएटरों में लॉबी कार्ड का प्रयोग किया जाने लगा। ये लॉबी कार्ड पोस्टर के समान होते हैं लेकिन छोटे आकार के। लॉबी कार्ड का महत्व घटने लगा क्योंकि फिल्म थिएटरों ने एकमात्र प्रदर्शक के रूप में अपना महत्व खो दिया। लॉबी कार्ड अब दुर्लभ संग्रहणीय वस्तुएँ हैं।

बाईं ओर की कहानी पढ़ें और नीचे दिए गए 'ग़ौर करें, विवरण दें, विचार करें' नेमी को पूरा करें:

ग़ौर करें।

दी गयी कहानी में जो लॉबी कार्ड आपको सबसे आकर्षक लगा, उसका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें तथा विवरण का ब्योरा भी दें। धीरे-धीरे इसका चित्र बना कर, आप विभिन्न आवर्धन की तस्वीरें भी देख सकते हैं।

विवरण दें।

फिर एक अनुच्छेद लिखें या किसी मित्र को बताएं कि लॉबी कार्ड किस प्रकार जटिल है?

विचार करें।

अवलोकन करने के बाद, आपके मन में क्या नए विचार और प्रश्न उत्पन हुए?

फिल्म श्री ४२० के लिए फोटोग्राफिक लॉबी स्टिल, म्यूजियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्राफी

फ़िल्म अभिलेख

विशेष रूप से फिल्म अभिलेख का लक्ष्य ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमे फिल्म फुटेज को संरक्षित किया जा सके। अनगिनत मूक फिल्मों में से केवल कुछ ही नेशनल फिल्म आर्काइव्ज ऑफ़ इंडिया, पुणे, में संरक्षित की गई हैं, क्योंकि अधिकांश प्रिंट क्षय या आग के कारण नष्ट हो गए हैं। यह हिंदी सिनेमा के इतिहास के पुनर्निर्माण में एक बड़ा झटका रहा है।

दाईं ओर दिए गए सिनेमाज़ी के फिल्म पोस्टरों की प्रदर्शनी के स्ट्रीट व्यू की खोजबीन करें और विस्तृत अवलोकन करने के लिए नीचे दिए गए 'ध्यान दें: फाइव टाइम्स टू' नेमी को पूरा करें।

१. कम से कम ३० सेकंड तक स्ट्रीट व्यू को ध्यानपूर्वक देखें। ऐसा कौन सा दृश्य या पोस्टर है जिसने आपका ध्यान आकर्षित किया?

२. सिनेमाज़ी के प्रदर्शनी या फिल्म के पोस्टर में किन पहलुओं पर आपने ध्यान दिया? उन पांच चीजों को सूचीबद्ध करें या चित्र बनाएं।

३. पहले चरणों को दोहराएं, निरीक्षण करें और अपने अवलोकन के अन्य पांच पहलुओं को सूची में जोड़ने का प्रयास करें।

आप दोनों सत्रों के अवलोकन के बाद अपने सहकर्मी के साथ अपनी सूची साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के अवलोकन को रेखांकित करते हुए नोट्स का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

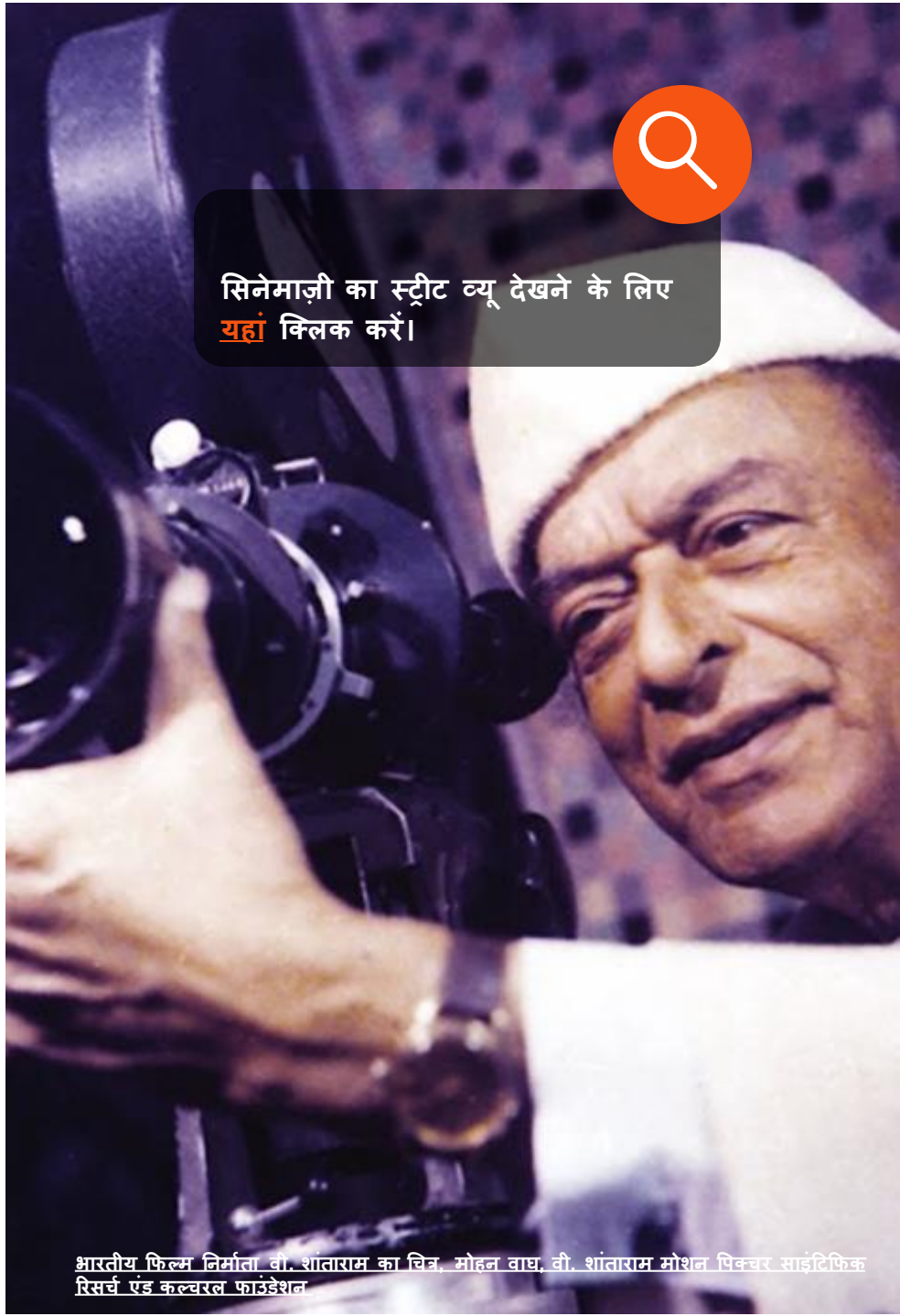

भारतीय फिल्म निर्माता वी. शांताराम का चित्र. मोहन वाघ. वी. शांताराम मोशन पिक्चर साइंटिफिक रिसर्च एंड कल्चरल फाउंडेशन.

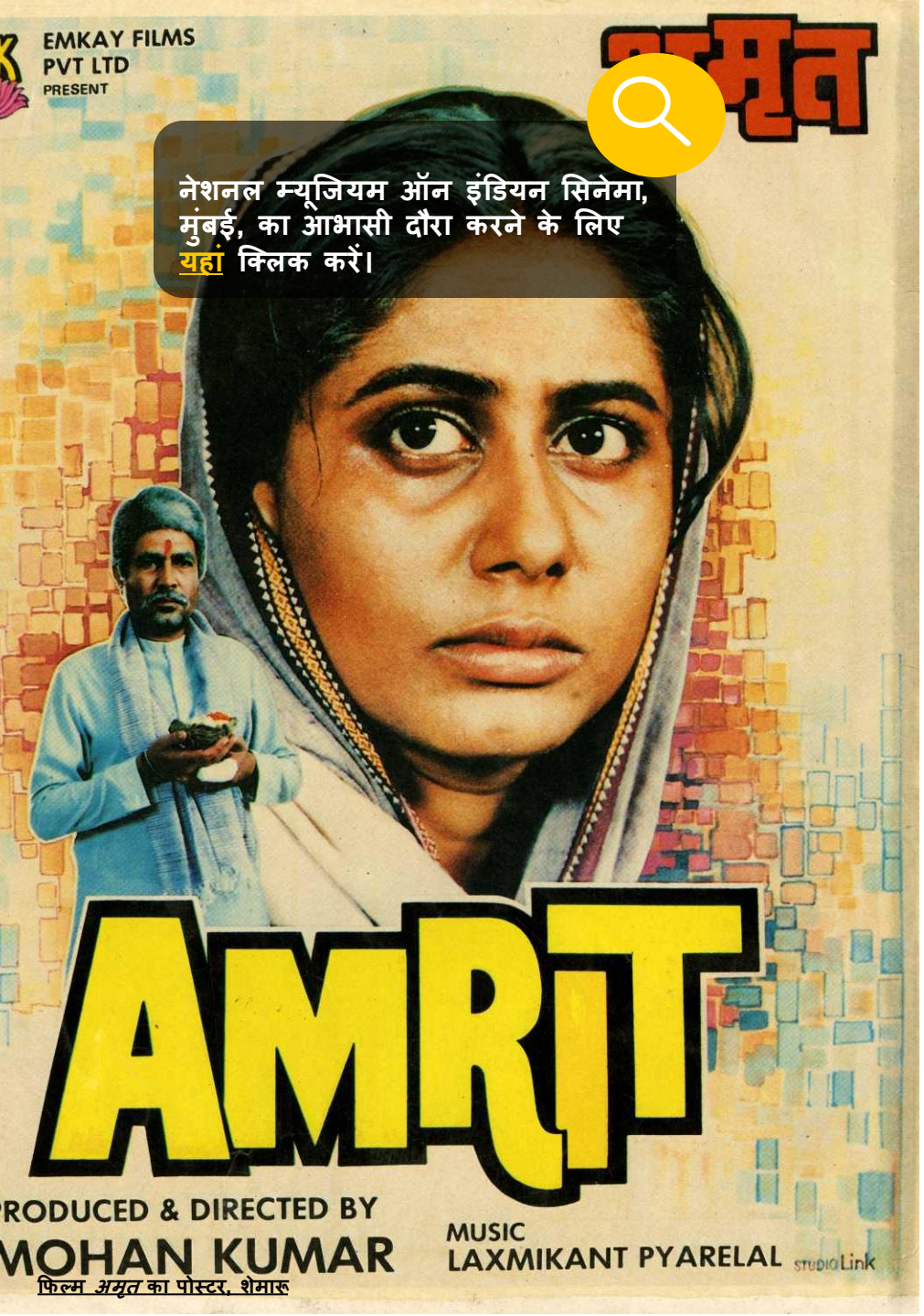

नेशनल म्यूजियम ऑन इंडियन सिनेमा, मुंबई, का आभासी दौरा करने के लिए यहां क्लिक करें।

फ़िल्म *अमृत* का पोस्टर, शेमारू

फ़िल्म संग्रहालय

भारत में नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कारपोरेशन (एन.एम.आई.सी.) के तहत नेशनल म्यूजियम ऑन इंडियन सिनेमा एवम नेशनल फिल्म आर्काइव्ज ऑफ़ इंडिया, फिल्म पोस्टरों और यादगार वस्तुओं के माध्यम से सिनेमा के इतिहास को प्रदर्शित और संरक्षित करें। इनमें दर्शकों का अनुभव और दिलचस्प बनाने के लिए डिजिटल इंटरैक्टिव स्क्रीन का भी प्रयोग किया जाता है।

बाईं ओर दिए गए वीडियो के माध्यम से एन.एम.आई.सी., मुंबई, का आभासी दौरा करें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर में 'एक मिनट का पेपर' लिखें।

- एन.एम.आई.सी., मुंबई, के वर्चुअल दौरे में आपको क्या विशेष लगा?

- एन.एम.आई.सी. के इस आभासी दौरे में या सिनेमाज़ी में फिल्म पोस्टरों की प्रदर्शनी का स्ट्रीट व्यू में से आप सबसे अधिक किस वस्तु से सम्बन्ध बना पाए?

- अपने आभासी अन्वेषण के आधार पर बताएं कि हिंदी सिनेमा के बारे में आपकी राय या दृष्टिकोण को किस चीज़ ने प्रभावित किया और कैसे?

फिल्म निर्माण से सम्बन्ध बनाने हेतु अपने पसंदीदा अभिनेता/निर्देशक की उल्लेखनीय फिल्मों से यादगार वस्तुओं/रंगमंच का सामान/पोशाकों/प्रॉप्स/ परिधान का उपयोग करके उन पर एक फिल्म प्रदर्शनी डिजाइन करें।

आप मुखौटे प्रदर्शित कर सकते हैं या आसान पोशाकें तैयार करने के लिए उपलब्ध कपड़े का उपयोग कर सकते हैं। आप पात्रों से संबंधित अलग-अलग रंगमंच का सामान भी प्रदर्शित कर सकते हैं, जैसे धूप का चश्मा, टोपी, छाता, टॉर्च, आदि।

लॉबी कार्ड, पत्रिकाएँ, पोस्टर, स्क्रिप्ट और तस्वीरों जैसी यादगार चीज़ें ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं।

अपने साथियों को प्रदर्शनी में आमंत्रित करें और उनसे प्रतिपुष्टी फॉर्म भरवाएं।

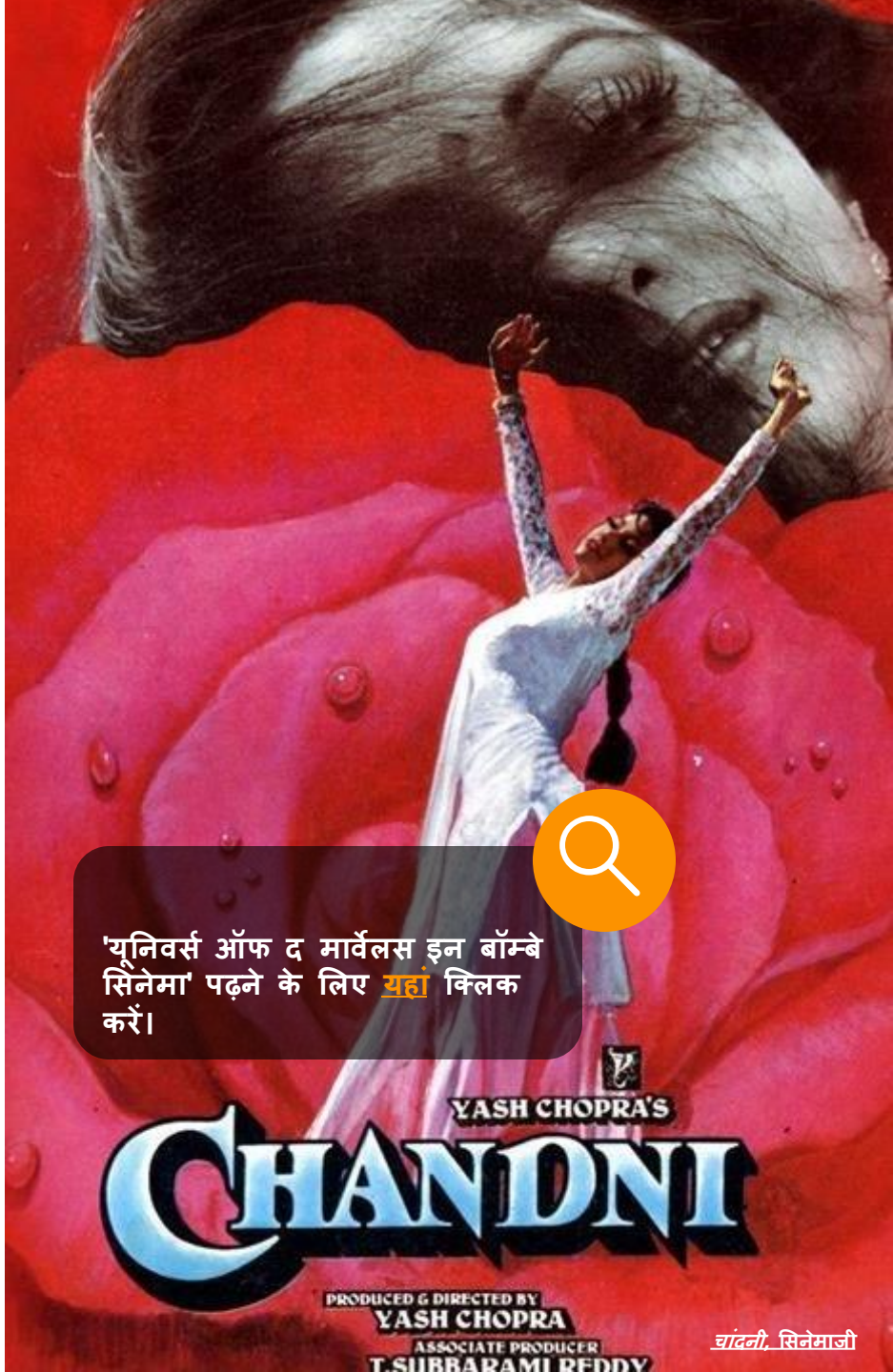

चांदनी, सिनेमाजी

अपनी प्रगति की जांच के लिए इस प्रश्नोत्तरी में शामिल हों।

१. फ़िल्म पोस्टर एक साधन हैं -
क. कला का
ख. अभिलेख का
ग. विपणन का
घ. संग्रहालय का

२. लॉबी कार्ड यहाँ पाए जाते हैं -
क. नाटकशाला में
ख. सड़क पर
ग. स्टूडियो में
घ. दुकानों में

३. कई भारतीय मूक फिल्मों के कुछ प्रिंट राष्ट्रीय अभिलेख में सुरक्षित हैं क्योंकि
क. वे क्षय और आग में नष्ट हो गए
ख. देश में उपयुक्त संरक्षण सुविधाएं नही हैं
ग. देश संरक्षण की वृत्ति पर अवरोध लगाता है
घ. उपर्युक्त सभी

४. १९९० के दशक से हिंदी फिल्मों में किस तरह के पोस्टरों का बोलबाला है ?
क. डिजिटल फोटो मुद्रित पोस्टर
ख. मुद्रित फ़िल्म पोस्टर
ग. हाथ से चित्रित फ़िल्म पोस्टर
घ. लॉबी कार्ड

उत्तर पृष्ठ ३६ पर देखे जा सकते हैं

सत्र-३

फिल्म कैसे बनाएं

अनुमानित समय:
९० मिनट

यश चोपड़ा, फिल्म निर्माता एक शॉट का निर्देशन करते हुए, यश राज फिल्म्स (वाई.आर.एफ.), मुंबई

सिनेमा केवल वारदातों का दस्तावेजीकरण ही नहीं है, बल्कि कहानियां बयां करने का एक ऐसा महत्वपूर्ण माध्यम भी है जो मूक युग में भी प्रभावी और सफल था। फिल्मों में कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए किसी कथावाचक की हमेशा आवश्यकता नहीं होती। निर्देशक द्वारा निर्देशित शॉट अनुक्रम, गाने, संवाद और संगीत दर्शकों को कहानी समझाने में सक्षम बनाते हैं।

नीचे दी गयी 'सोंचे, खोजें, सामान्यता बूझें' नेमी को कम से कम दो अन्य साथियों के साथ पूरा करें।

सोचें
दो ऐसी किसी फिल्मों की तुलना करें जो समान विषय को अलग-अलग तरीकों से दर्शाती हैं।

बात करें
आप और आपके साथी दो-तीन मिनट एक दूसरे के साथ व्यतीत करें और टिप्पणियाँ और राय साझा करें।

सामान्यता बूझें
एक बार साझाकरण सत्र समाप्त होने के बाद, कहानियाँ सुनाने के तरीकों के विषय में विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा करने के उपरांत जाने कि दोनों में क्या समानताएं हैं।

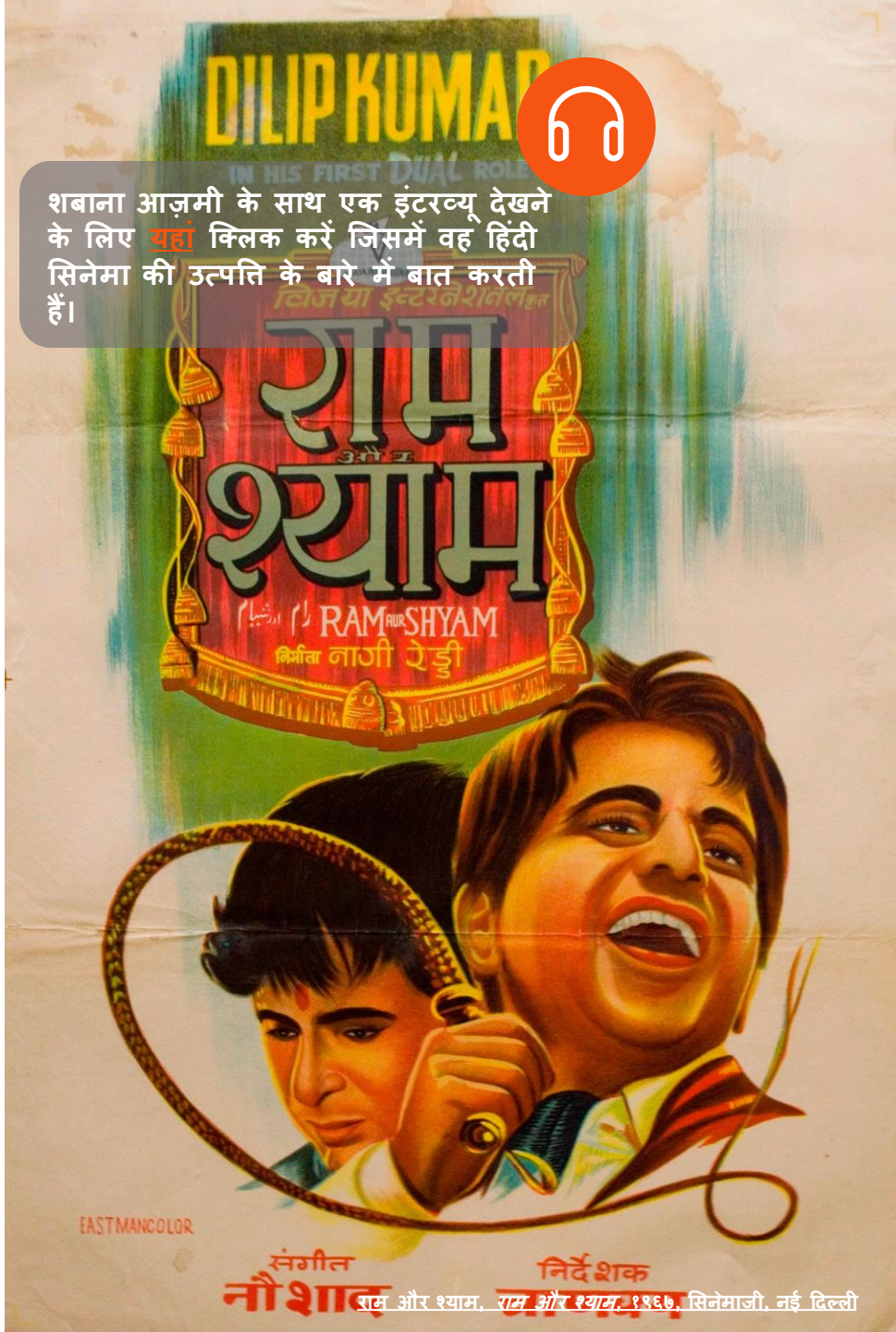

शबाना आज़मी के साथ एक इंटरव्यू देखने के लिए यहां क्लिक करें जिसमें वह हिंदी सिनेमा की उत्पत्ति के बारे में बात करती हैं।

राम और श्याम, *राम और श्याम*, १९६७, सिनेमाजी, नई दिल्ली

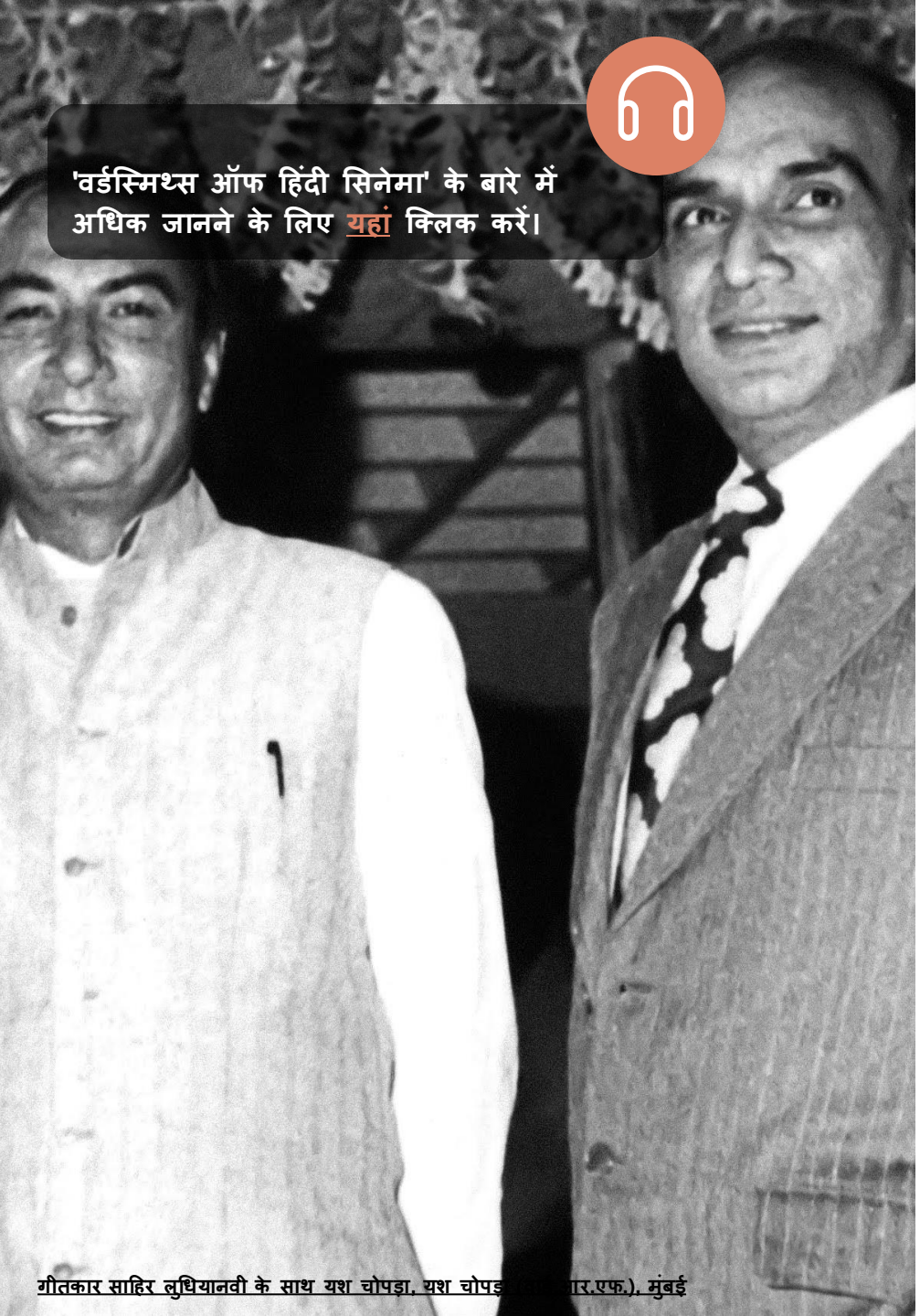

'वर्डस्मिथ्स ऑफ हिंदी सिनेमा' के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

गीतकार साहिर लुधियानवी के साथ यश चोपड़ा, यश चोपड़ा [illegible]आर.एफ.), मुंबई

विचार निर्माण और पटकथा लेखन

फ़िल्म की पटकथाएँ अक्सर समकालीन जीवन का दर्पण होती हैं। कहानी कहने व्यक्त करने की कला एक सम्मोहक पटकथा के लिए आवश्यक कौशल है। पात्रों के संवाद, दृश्य समायोजन और एक्शन विचारपूर्वक डाले जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, मुग़ल-ए-आज़म (१९६०) के संवाद उर्दू में अमाह खान, ईशान रिज़वी, कमाल अमरोही और वजाहत मिर्ज़ा द्वारा लिखे गए थे। इस फ़िल्म की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक रहा।

बाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें, ऑनलाइन शोध करें, और दो मिनट की शॉर्ट फिल्म के लिए एक प्रारूप लिखें। नीचे दिए गए निर्देशों का पालन करें।

अपनी मूल अवधारणा को रेखांकित करें
सबसे पहले, अपनी शॉर्ट फिल्म के विषय को स्पष्ट करें। फिर, कहानी की शैली निर्धारित करते समय कथानक के विवरण की रूपरेखा तैयार करें और पात्र को कुछ विशेष कार्य दें।

कहानी का मुख्य भाग
अपनी कहानी को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए उसमें संघर्ष से परिपूर्ण संक्षिप्त उपकथाएँ लिखें। ऐसे दृश्य और संवाद लिखें जो कहानी की संरचना और उसके प्रवाह में मदद करें।

निष्कर्ष
संघर्ष के निष्कर्ष से पहले कहानी में एक मोड़ जोड़ें। यह सुनिश्चित कर लें कि कोई अवांछित विवरण न हो। रचनात्मक प्रतिक्रिया पाने के लिए साथियों के साथ अपनी पटकथा साझा करें।

पात्र-निर्धारण

पात्र-निर्धारण फिल्मों में किरदार निभाने के लिए अभिनेताओं के चयन की एक प्रक्रिया है। इसमें श्रवण-शक्ति, चित्रपट परीक्षण, रूप परीक्षण आदि की एक श्रृंखला शामिल होती है। किसी फिल्म के लिए पात्र-निर्धारण करते समय कुछ भूमिकाएँ विशिष्ट अभिनेताओं के व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए लिखी जाती हैं।

दाहिनी ओर दी गई कहानी को पढ़ें। फिर नीचे दी गई 'सूचीबद्ध और चिंतन' नेमी को पूरा करें।

सूचीबद्ध। और चिंतन।

हिंदी फिल्मों में कुछ यादगार सहायक भूमिकाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करें।
अपने निष्कर्षों के आधार पर, सहायक पात्रों के नाम और फिल्म में उनकी भूमिका की एक सूची बनाएं।

अपने अवलोकनों का विश्लेषण करें।
उन सामान्य तरीकों पर विचार करें जिनमें एक सहायक पात्र मुख्य किरदार की सहायता करता है या फिल्म के व्यापक कथानक को आगे बढ़ाता है।

हिंदी फिल्म *गरमा गरम* से नादिरा की तस्वीर, १९५७, म्यूज़ियम ऑफ आर्ट एंड फोटोग्राफी

पोशाक, सेट और मेकप

हिंदी सिनेमा में फैशन और वेशभूषा की उन्नति के विषय में एक कहानी देखने के लिए यहां क्लिक करें।

देवदास में ऐश्वर्या राय, २००२, म्यूजियम ऑफ डिजाइन एक्सीलेंस

किसी कहानी में उचित भूमिका बांधने के लिए स्थानों और जगह की खोज करना महत्वपूर्ण होता है। वेशभूषा किसी पात्र के व्यक्तित्व और सामाजिक-संस्कृति की स्थिति को चित्रित करने में मदद करती है। परिधान की बनावट की प्रक्रिया पटकथा की समझ बनाने के साथ शुरू होती है। अभिनेता का मेकप फिल्म में निभाए जा रहे उसके चरित्र के अनुसार ही किया जाता है।

बाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें, ऑनलाइन शोध करें और 'रचनात्मक प्रश्नों' की नेमी को पूरा करने के लिए नीचे दिए गए निर्देशों का पालन करें।

प्रतिष्ठित फ़िल्म परिधानों के बारे में आपने अब तक क्या सीखा है, इसके बारे में प्रश्नों की एक सूची बनाएं और उस पर मंथन करें।
'फैशन को स्क्रीन पर किसी चरित्र के चित्रण का हिस्सा कैसे बनाया जा सकता है?' ऐसे प्रश्नों के विषय में चिंतन करें।

इन प्रश्नो का अपने पसंदीदा माध्यम से अन्वेषण करें।
आप एक कहानी लिख सकते है, एक चित्र बना सकते हैं, या प्रस्तुति दे सकते हैं।

आपने जो सीखा है उस पर चिंतन करें।
क्या इस जानकारी से नये विचार उत्पन्न हुए? उन विचारों को सूचीबद्ध करें और किसी सहकर्मी के साथ उन पर चर्चा करें।

एक फिल्म निर्देशक फिल्म को रूप और आकार देने के लिए पटकथा, सेट डिजाइन, अभिनेता, कैमरावर्क और संपादन का प्रबंध करता है। वह पूरी फिल्म निर्माण प्रक्रिया की देखरेख करता है। इसलिए, उसके पास कहानी कहने का अद्भुत कौशल होना चाहिए जो उसकी पसंद और दृश्यों के चित्रण में परिलक्षित होता है।

दाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें और नीचे दिए गए 'परत' नेमी को पूरा करें। प्रत्येक परत में वी. शांताराम के जीवन और काल से संबंधित वे सभी तत्व विद्यमान हो जिनसे हम उनके विषय में जान सकें।

कहानी को पहचानें
कहानी में क्या सन्देश दिया जा रहा है?

इसके सौंदर्यशास्त्र पर ध्यान दें
कहानी का कौन-सा पहलू आपको आकर्षित करता है? आप इससे क्या समझ सकते हैं? निर्देशक के कौशल में नया/अलग/असामान्य क्या है?

यांत्रिक तत्वों की खोज करें
वी. शांताराम के निर्देशन में कौन-सी तकनीक, रूप, प्रतीकवाद दृष्टिगोचर होता है?

सम्बन्ध पर पहेली
इसका अन्य कार्यों से क्या संबंध है इसे दर्शाते हुए पहेली बनाएं जो इतिहास और आपके अपने जीवन या परिवेश के साथ जुड़ी हों।

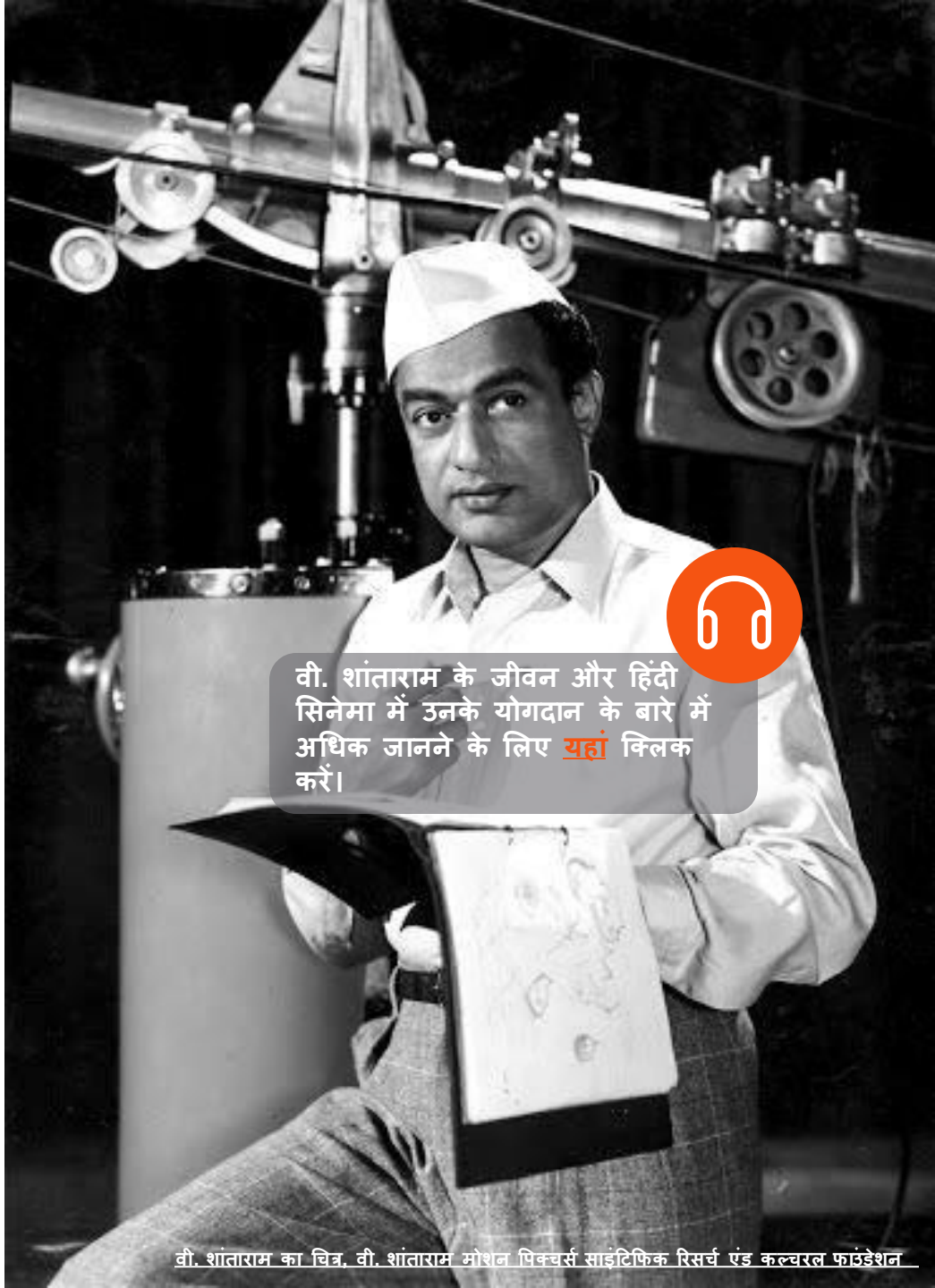

वी. शांताराम के जीवन और हिंदी सिनेमा में उनके योगदान के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

वी. शांताराम का चित्र, वी. शांताराम मोशन पिक्चर्स साइंटिफिक रिसर्च एंड कल्चरल फाउंडेशन

हिंदी सिनेमा में 'नृत्य' के तत्व और इसके विकास के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

रेखा, 'आंखों की मस्ती', उमराव जान, १९८१, म्यूजियम ऑफ डिजाइन एक्सीलेंस

गीत और नृत्य

हिंदी सिनेमा अपने गाने और नृत्य तारतम्य के लिए जाना जाता है। बॉलीवुड नृत्य भारतीय नृत्य रूपों (शास्त्रीय और लोक) और गैर-भारतीय नृत्य रूपों का एक मिश्रण है। इस बीच, गीतकारों, गायकों और संगीतकारों ने मिलकर एक साथ अविस्मरणीय धुनें बनाईं। गीत और नृत्य के अनुक्रम अधिकतर संवाद या कथन की तुलना में फिल्म के एक क्षण की महत्वता को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने में अधिक सक्षम होते हैं।

नीचे दिए गए निर्देशों का उपयोग करके अपने साथियों की मदद से 'खोज करें, सर्जन करें, चिंतन करें' नेमी को पूरा करें:

विभिन्न बॉलीवुड गाने की खोज करें

उस गाने के बोल ढूंढें जो आपको सबसे अधिक पसंद आया। कारियोके ऐप की मदद से साथ में गाएं।

गाते वक़्त किसी सहकर्मी से आपका वीडियो रिकॉर्ड करने का अनुरोध करें

आप गाने की लय से मिलते-जुलते कुछ सरल डांस स्टेप्स भी कोरियोग्राफ कर सकते हैं।

चिंतन करने के लिए कुछ क्षण निकालें

इस बारे में सोचें कि यह गाना फिल्म में एक संवाद से बेहतर कैसे काम कर सकता था।

साहसी एक्शन स्टंट ने हिंदी सिनेमा को विपणन बढ़त दी है। शुरुआती एक्शन फिल्में, जैसे *फियरलेस नादिया*, बाद की फिल्मों में प्रदर्शित एक्शन दृश्यों की अग्रदूत थीं। हिंदी सिनेमा में मार्शल आर्ट का प्रभाव मुख्य रूप से १९७० के दशक में ब्रूस ली और जैकी चैन की फिल्मों के साथ हांग कांग से आया।

दाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें और केवल कुछ सेकंड तक चलने वाले एक एक्शन क्रम का प्रारूप तैयार करें। इसके बाद इसे उस कहानी में शामिल किया जा सकता है जिस पर आपने इस सत्र में पहले काम किया था।

ऐसी तारतम्यता हो जो संवादों के बजाय शारीरिक गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करे। पात्रों की महाशक्तियों को प्रदर्शित करके एक्शन क्रम को रोमांचक बनया जा सकता है।

आपके क्रिया क्रम का विवरण आपकी कहानी को आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

हिंदी सिनेमा में एक्शन फिल्मों का नेतृत्व करने वाली पहली महिला 'फियरलेस नादिया' के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

हंटरवाली से फियरलेस नादिया की तस्वीर, म्यूजियम ऑफ डिजाइन एक्सीलेंस

वी. शांताराम की संपादन और निर्देशन शैली को समझने के लिए यहां क्लिक करें।

प्रभात फिल्म कंपनी में अपने कार्यकाल के दौरान एक फिल्म का संपादन करते हुए वी. शांताराम की तस्वीर, वी. शांताराम मोशन पिक्चर साइंटिफिक रिसर्च एंड कल्चरल फाउंडेशन

संपादन और विज्ञापन

फिल्म संपादन घटनाओं को एकत्रित करके, व्यवस्थित करके और जोड़कर स्पष्ट अनुक्रम में संयोजन करने की प्रक्रिया है। आकर्षक दृश्यों को एक सशक्त ध्वनि डिज़ाइन के साथ समन्वयित किया जाता है। एक संपादक अनिर्मित फिल्म फ़ुटेज पर काम करता है। संवादों को समकालिक फिल्मांकन से उत्पन्न होने वाले कमियों को दूर करने के लिए डबिंग का उपयोग किया जाता है। अंततः, फिल्म के विपणन के लिए पोस्टर बनाएं जाते हैं।

अब, बाईं ओर दी गई कहानी को पढ़ें और किसी सहकर्मी की सहायता से नीचे दी गई 'दावा, समर्थन, प्रश्न' नेमी को पूरा करें।

दावा।

अनुक्रम, दृश्यों का एक ऐसा संग्रह है जो शॉट्स के कारण बनता है। अब, आपने अभी जो सीखा है उसके बारे में कोई दावा करें।

समर्थन।

यह निश्चित कर लें कि आप जानकारी के किसी प्रतिष्ठित स्रोत से अपने दावों का समर्थन कर रहे हैं। इस उद्देश्य के लिए आपको ऑनलाइन शोध करने की आवश्यकता हो सकती है।

प्रश्न।

आपके दावों पर आधारित आपके सहकर्मी के पास कोई प्रश्न है तो वह आपसे प्रश्न पूछ सकते हैं। बारी-बारी से दावे करें और प्रश्न पूछें।

समूहों में दो मिनट की शॉर्ट फिल्में बनाएं। प्रत्येक समूह सदस्य को एक विशिष्ट भूमिका दें। प्रत्येक सदस्य को दूसरों को भी सहायता प्रदान करनी चाहिए।

ड्राफ्ट स्क्रिप्ट संपादित करें

आपने पहले एक ड्राफ्ट स्क्रिप्ट तैयार की थी। अनावश्यक विवरण हटाने के लिए इसे संपादित करें ताकि आपके संवादों का बोलने का तरीका आपके पात्रों के व्यक्तित्व गुणों को व्यक्त कर सके।

स्मार्टफोन या किसी अन्य वीडियो रिकॉर्डिंग यंत्र का उपयोग करके अपनी फिल्म शूट करें

एक बार जब आप कलाकारों को अंतिम रूप दे लें, तो अपने समूह के सदस्यों की मदद से उनकी वेशभूषा और सेट तैयार करें। फिर शूटिंग की तैयारी करें। सुनिश्चित करें कि प्रकाश उस माहौल के अनुरूप हो और ध्वनि स्पष्ट हो। अपनी फिल्म को संक्षिप्त और आकर्षक बनाने के लिए उसके अंतिम संस्करण को संपादित करें।

अपनी फिल्म के विपणन के लिए पोस्टर बनाएं (वैकल्पिक)

समूह के सदस्यों को फिल्म के पोस्टर को डिजाइन करने का नेतृत्व करने दें, जिसका उपयोग फिल्म के विज्ञापन के लिए किया जाएगा।

फ़िल्म का प्रदर्शन करें (वैकल्पिक)

फिल्मों की स्क्रीनिंग आयोजित करें और स्कूल को देखने के लिए आमंत्रित भी करें।

यश चोपड़ा के योगदान का विवरण देखने के लिए यहां क्लिक करें।

यश चोपड़ा, फिल्म निर्माता, अपने शुरुआती दिनों से, यश राज फिल्म्स (वाई.आर.एफ.) मुंबई

अपनी प्रगति की जांच के लिए इस प्रश्नोत्तरी में शामिल हों।

१. फिल्मांकन की प्रक्रिया किसके साथ शुरू होती है?
क. कैमरा
ख. लिखी हुई कहानी
ग. विचार
घ. सेट

२. एक कॉस्ट्यूम डिजाइनर एक नई फिल्म परियोजना शुरू करने पर सबसे पहले क्या करेगा?
क. पोशाक के लिए सामग्री खरीदेगा
ख. पोशाक बनाना शुरू करेगा
ग. फिल्म की कहानी पढ़ेगा
घ. कलाकारों से मिलेगा

३. किसकी समग्र दृष्टि फिल्म को आगे बढ़ने में मदद करती है?
क. मुख्य कलाकार
ख. निर्देशक
ग. पटकथा लेखक
घ. निर्माता

४. संपादन का एक हिस्सा है -
क. पूर्व-उत्पादन
ख. उत्पादन
ग. प्री-प्रोडक्शन
घ विकास

उत्तर पृष्ठ ३७ पर देखे जा सकते हैं

प्रश्नोत्तरी १ के उत्तर

१.निम्नलिखित में से १९१३ में दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित कौन-सी हिंदी सिनेमा की पहली मूक फिल्म थी?
घ. *राजा हरिश्चंद्र*

२. हिंदी सिनेमा में किस दौर में दिलीप कुमार, राज कपूर और देव आनंद की सितारा तिकड़ी का बोलबाला था?
ख. स्वर्ण युग

३. निम्नलिखित में से कौन-सी हिंदी फिल्म की अभिनेत्री ७० के दशक में फैशन की बोहेमियन शैली को पश्चिम से सिल्वर स्क्रीन पर लेकर आई?
ग. जीनत अमान

४. भारत में मसाला फिल्म की शैली मुख्यतः -
क. मुख्यधारा है

५. यदि किसी फिल्म का लक्ष्य दर्शकों को हंसाना है तो वह किस शैली से संबंधित होगी?
ख. कॉमेडी

प्रश्नोत्तरी २ के उत्तर

१. फ़िल्म पोस्टर एक साधन है
ग. विपणन का

२. लॉबी कार्ड यहाँ पाए जाते हैं -
क. नाटकशाला में

३. कई भारतीय मूक फिल्मों के कुछ प्रिंट राष्ट्रीय अभिलेख में सुरक्षित हैं क्योंकि
घ. उपर्युक्त सभी

४. १९९० के दशक से हिंदी फिल्मों में किस तरह के पोस्टरों का बोलबाला है?
क. डिजिटल फोटो मुद्रित पोस्टर

प्रश्नोत्तरी ३ के उत्तर

१. फिल्मांकन की प्रक्रिया किसके साथ शुरू होती है?
ग. विचार

२. एक कॉस्ट्यूम डिजाइनर एक नई फिल्म परियोजना शुरू करने पर सबसे पहले क्या करेगा?
ग. फिल्म की कहानी पढ़ेंगा

३. किसकी समग्र दृष्टि फिल्म को आगे बढ़ने में मदद करती है?
ख. निर्देशक

४. संपादन का एक हिस्सा है
क. पूर्व-उत्पादन

हिंदी सिनेमा की जादुई दुनिया के बारे में और अधिक जानने और पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें।